JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संचार माध्यम और भारतीय ग्रामीण शिक्षा में नवाचार

मनोज कुमार
पी–एच.डी. शोधार्थी (शिक्षा)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार
ई–मेल : manoj09011976@gmail.com

सारांश :– नवाचार समाज को विकसित करने के लिए एक बहुत ही महत्वूपर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा में नवाचार उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना अन्य क्षेत्रों में नवाचार। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के विकास तथा उसमें नवाचार ला कर हीं ग्रामीण जीवन को सफल तथा सरल बनाया जा सकता है। संचार माध्यम शिक्षा में नवाचार के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है। प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक तरीके से संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग को बताया गया है, जो ग्रामीण छात्रों को समान रूप से शिक्षा के विकास तथा नवाचार में मदद करता है। इंटरनेट एक ऐसी युक्ति है जो पूरे विश्व को एक साथ जोड़ती है। कम्प्यूटर इंटरनेट के उपयोग को आसान तथा सुविधाजनक बनाता है। आजकल दुनिया में कहीं भी कोई भी शैक्षणिक नवाचार होता है तो उसको छात्र इंटरनेट की मदद से देख सकते हैं और उसके आधार पर अपने शिक्षा में नवाचार के लिए प्रेरित हो सकते हैं। यहाँ टेलीविजन, रेडियो, कम्प्यूटर, इंटरनेट के बारे में बताया गया है कि कैसे इन सभी संचार माध्यमों का प्रयोग शिक्षा में किया जाता है। संचार प्रौद्योगिकी ही एक ऐसी युक्ति है जिसकी मदद से ग्रामीण छात्र अपने शिक्षा को शहरी छात्रों के समानान्तर बढ़ा सकते हैं तथा उसमें नवाचार लाकर अपना तथा अपने ग्रामीण समाज को शिक्षित तथा विकसित कर सकते हैं।

मूल शब्द :– नवाचार, ग्रामीण शिक्षा, संचार माध्यम, कम्प्यूटर, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट।

प्रस्तावना :– भारतीय गाँवों में भी शिक्षा में समानान्तर विकास को नकारा नहीं जा सकता है। आजादी के बाद भारतीय गाँवों का विकास बड़ी तेजी से हुआ है, जिसमें शिक्षा भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गाँवों को सड़कों से जोड़ा गया है, बिजली की आपूर्ति की गई है, संचार के साधनों का भी प्रयोग ग्रामीण स्तर पर बढा है जो ग्रामीणों के दैनिक

आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ उनके शिक्षा के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दोनों तरफ समान रूप से क्रियाशील रहने की जरूरत होती है। आज के इस आधुनिक युग में संचार के माध्यमों में तकनीकी का भी सहारा लिया जा रहा है जो हमें अधिक सटीक और सुविधाजनक बनाते हैं। संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विचारों, अनुभवों, भावों की सहभागिता होती है।

संचार की परिभाषा :–

जॉन हैरिस के अनुसार – ''समानता स्थापित करने की प्रक्रिया ही संचार है।''

वीवर के अनुसार – ''संचार नामक प्रक्रिया की सहायता से हम दूसरों को आसानी से प्रभावित कर सकते है।''

शिक्षा वह सस्ता और लोकतांत्रिक साधन है जो पैसे और हिंसा की ताकत से निबटने में हमारी सहायता करता है। शैक्षणिक नवाचार को ग्रामीण स्तर तक पहुँचाना भारत में एक बुहत ही कठिन कार्य रहा है लेकिन आज के इस आधुनिक और तकनीकी युग में यह बहुत हद तक सफल हो रहा है। भारतीय गाँवों में शिक्षा के द्वारा ही लोगों को जागरूक तथा भविष्योन्मुखी बनाया जा सकता है, शिक्षा के द्वारा ही लोगों के कार्य क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग किया जा सकता है जो कहीं न कहीं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में हमारे देश के विकास में सहायक होती है। शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ डिग्री प्राप्त करना ही नहीं होता है बल्कि इससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास भी होता है।

शिक्षा की परिभाषा :–

महात्मा गाँधी के अनुसार – ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।''

स्वामी विवेकानंद के अनुसार – ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

नवाचार का अर्थ नये विचारों का प्रचलन एवं नई रीतियों की शुरूआत। नवाचार अंग्रेजी के 'इनोवेशन' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। परम्परागत शिक्षा में समय के हिसाब से परिवर्तन नवाचार के द्वारा ही संभव हो पाता है। भारतीय समाज में दिन–प्रतिदिन आने वाली जरूरतों को नवाचार द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। किसी भी तरह के नवाचार का आधार भी शैक्षणिक नवाचार है। आज भारतीय गाँव किसी मामले में शहरों से कम नहीं हैं। हर वो विकास या परिवर्तन जो शहरों में होता है, उसको भारतीय गाँवों में भी देखा जा रहा है। ये कहीं न कहीं संचार साधनों के द्वारा ही संभव हो पा रहा है।

नवाचार की परिभाषा :–

एच.एस. बर्नेट के अनुसार – ''कोई भी नवीन विचार या व्यवहार जो वर्तमान से गुणवत्ता में भिन्न है, नवाचार है।''

भोला एच.एस. के अनुसार – ''नवाचार एक प्रत्यय है, एक अभिवृति है, कौशलयुक्त एक उपकरण है अथवा दो या दो से अधिक ऐसे तथ्य हैं जिन्हें व्यक्ति ने या संस्कृति ने व्यावहारिक रूप से आत्मसात न किया हो।''

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :– भारत के गाँवों में शिक्षा विकास तथा उसमें नवाचार को समझने तथा उसको संचार साधनों के प्रयोग से भविष्योन्मुखी बनाने के लिए।

अध्ययन का उद्देश्य :– संचार माध्यमों के बारे में जानने तथा उनके प्रयोग को समझ कर ग्रामीण शिक्षा में नवाचार को बढ़ाना ही इस अध्ययन का उद्देश्य है।

अध्ययन की विधि :– यह अध्ययन मूलतः वर्णात्मक शोध है। इसमें प्रयुक्त आँकड़े पूर्णतया द्वितीयक हैं। इसमें प्रयुक्त आँकड़े मूलतः जर्नल, किताबों तथा शैक्षणिक वेबसाईट से लिये गये हैं।

ग्रामीण शिक्षा के विकास एवं नवाचार में संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग :– प्रौद्योगिकी अंग्रेजी शब्द टेक्नोलॉजी का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसका अर्थ होता है किसी भी कार्य को पारंपरिक तरीके से न करके किसी विशेष कौशल के साथ करना जिससे न सिर्फ समय की बचत होती है बल्कि धन और परिश्रम भी कम लगता है। प्रौद्योगिकी का प्रयोग मनुष्य आदि काल से करते आ रहे हैं। आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कौशल बन गया है। संचार तो लगभग पूर्णतः अब प्रौद्योगिकी पर आधारित हो गया है इसके हर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का हीं सहारा लेना पड़ रहा है। आज भारतीय शहरों के साथ–साथ भारतीय गाँवों में भी शिक्षा के विकास एवं इसमें नवाचार के लिए संचार प्रौद्योगिकी को आधार बनाया जा रहा है। ग्रामीण शिक्षा के विकास एवं नवाचार में उपयोग किये जा रहे कुछ संचार माध्यम इस प्रकार हैं–

1. कम्प्यूटर :– यह एक ऐसा उपकरण है जो आधुनिक युग में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह आज के युग में शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह उपकरण अनुदेशन प्रक्रिया को अधिक से अधिक वैयक्तिक स्वचालित बनाता है। कम्प्यूटर के मुख्यतः तीन भाग होते हैं (क) सी.पी.यू. (ख) इनपुट यूनिट (ग) आउटपुट यूनिट। कम्प्यूटर अव्यवस्थित आँकड़ों को प्रोसेस करके व्यवस्थित आँकड़ों में बदल देता है। इसे कृत्रिम बुद्धि

की संज्ञा दी गई है। इसमें मनुष्य के स्मरण शक्ति से अधिक स्मरण शक्ति होती है। यह एक ऐसा उपकरण है जिसे अकेले भी चलाया जा सकता है और बहुत सारे अन्य कम्प्यूटरों साथ जोड़ कर भी। जब अन्य कम्प्यूटरों के साथ इसे जोड़ा जाता है तो इसे नेटवर्क कम्प्यूटर कहा जाता है। कम्प्यूटर के मुख्यतः चार कार्य होते हैं (क) डेटा संकलन (ख) डेटा संचयन (ग) डेटा संसाधन (घ) डेटा निर्गमन। शिक्षा में कम्प्यूटर का बहुत ही प्रभावशाली तरीके से उपयोग किया जा रहा है। जैसे –

(क) छात्रों द्वारा पूर्व में अर्जित ज्ञान को अभ्यास के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है।

(ख) बालकों के ज्ञान की जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए भी कम्प्यूटर का उपयोग किया जा रहा है।

(ग) एक अच्छे शिक्षक के रूप में भी कम्प्यूटर मुख्य भूमिका निभाता है आज कल ऐसे कार्यक्रम तैयार किये जा रहे है जिससे बिना शिक्षक के भी छात्र कम्प्यूटर की मदद से सीख सकते हैं।

(घ) प्रयोगशाला कार्य में भी कम्प्यूटर महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। शिक्षण क्षेत्र में सभी प्रकार के प्रायोगिक कार्यों से सम्बन्धित कम्प्यूटर कार्यक्रम चाहे वो किसी भी विषय से संबंधित हो अच्छी तरह उपलब्ध हो जाते हैं।

(ङ) कम्प्यूटर से छात्र प्रदत्त कार्य, चार्ट बनाने का कार्य भी करते हैं।

2. टेलीविजन :– कम्प्यूटर के प्रचलन में आने से पहले टेलीविजन सबसे महत्त्वपूर्ण उपकरण था। टेलीविजन की शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है इसका भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से उपयोग किया जा रहा है। रेडियों के बाद इसके आविष्कार ने हमारे समाज में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाया। यह रेडियो से भी अधिक श्रेष्ठ शिक्षा का साधन है। रेडियो पर तो हम उच्च कोटि के शिक्षा साहित्यकारों तथा कलाकारों की केवल आवाज ही सुन सकते हैं, परन्तु टेलीविजन पर न केवल उनकी आवाज बल्कि चेहरे भी देख सकते हैं। टेलीविजन को दृष्य–श्रव्य शिक्षण सहायक सामग्री भी कहा जाता है। भारत में टेलीविजन का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। जैसे –

(क) टेलीविजन की मदद से शिक्षा के सभी स्तरों में गुणात्मक विकास किया जा रहा है।

(ख) टेलीविजन स्कूली छात्रों की शिक्षा को रूचिकर बनाया है।

(ग) छात्रों के ज्ञान में स्पष्टता तथा स्थायित्व प्रदान करने में भी टेलीविजन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

3. रेडियो :– रेडियो भी प्रभावशाली उपकरणों में से एक है यह सस्ता होने के साथ–साथ आसानी से लाया ले जाया जा सकता है। यह एक शक्तिशाली श्रव्य सहायक सामग्री है। रेडियो का आविष्कार 1805 ई० में मार्कोनी ने किया था। भारत में रेडियो प्रसारण के दो प्रकार हैं – (क) साधारण प्रसारण (ख) शैक्षिक प्रसारण। रेडियो ग्रामीण शिक्षा के विकास तथा नवाचार में निम्न योगदान है–

(क) स्कूली पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे विषय होते हैं जिनको कक्षा में बताना कठिन होता है। ऐसे पाठों को रेडियो प्रसारण से आसानी से समझा जा सकता है। सामाजिक संस्थाओं के प्रकरण जैसे परिवार नियोजन के लाभ आदि विषय रेडियो नाटक द्वारा रूचिकर ढ़ंग से प्रस्तुत किये जाते हैं।

(ख) रेडियो स्कूली छात्रों को देश–विदेशों की जानकारी देकर उन्हें बाह्य संसार से जोड़ता हैं। संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, कलाकारों आदि के शब्द और अनुभव कक्षा के छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कराये जा सकते हैं।

4. इंटरनेट :– आज के आधुनिक युग में सबसे महत्वपूर्ण तथा उपयोगी संचार साधन इंटरनेट बन चुका है। चाहे शहरी परिवेश हो या ग्रामीण इंटरनेट के बिना किसी भी व्यक्ति की जरूरत पूरी नहीं हो सकती। शिक्षा के लिए तो यह रामबाण साबित हो रहा है। इंटरनेट का पूरा नाम इंटरनेशनल नेटवर्क है। यह आपस में जुड़े कम्प्यूटर नेटवर्क की एक ग्लोबल संरचना है। इंटरनेट को 'सूचना राजपथ' भी कहते हैं। इंटरनेट के आवश्यक घटक है – पर्सनल कम्प्यूटर, मॉडम, संचार माध्यम, इंटरनेट सॉफ्टवेयर या वेब ब्राउजर, इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर। इंटरनेट के कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हैं जो ग्रामीण शिक्षा में विकास के साथ–साथ नवाचार को भी बढ़ाता है –

(क) इंटरनेट से सूचनाओं की खोज की जाती है जो उसके सर्च टूल की मदद से की जाती है। कुछ सर्च टूल निम्न है– [http://www.google.com], [http://www.yahoo.com] आदि।

(ख) इंटरनेट में इलेक्ट्रॉनिक मेल की भी सुविधा होती है, जिसे ई–मेल कहते हैं। ई–मेल पते के दो भाग होते हैं– यूजर नेम तथा डोमेन नेम। प्रत्येक उपयोगकर्त्ता का ई–मेल एड्रेस तथा पासवर्ड होता है जो ई–मेल एकाउन्ट बनाकर प्राप्त किया जाता है। पासवर्ड से उपयोगकर्त्ता अपने ई–मेल की गोपनीयता बरकरार रख सकता है। ई–मेल से उपयोगकर्त्ता संदेश प्राप्त कर सकता है या भेज सकता है।

(ग) ई–लर्निंग भी इंटरनेट युग की एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यवस्था है। जिसकी मदद से छात्र बिना क्लासरूम में गये कम्प्यूटर और इंटरनेट की मदद से अध्ययन कर सकते हैं।

निष्कर्ष :– अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा के परंपरागत रूप को बदल कर ही हम ग्रामीण शिक्षा के विकास को बढ़ा सकते हैं तथा उसमें नवाचार के प्रोत्साहित कर सकते हैं। संचार माध्यमों के द्वारा ग्रामीण छात्र अपने गाँव में बैठे हुए देश–विदेश में शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले, परिवर्तन को देख और समझ सकते हैं। उपयुक्त सारे शैक्षणिक संचार साधनों के मदद से ग्रामीण छात्र शहरों के समानांतर अपनी जानकारी को बढ़ा सकते हैं।

संदर्भ–सूची :–

(1) साहू, राम भरोस संचार माध्यम एवं ग्रामीण विकास कला सरोवर, कला एवं धर्म शोध संस्थान, लोक कल्याणकारी ट्रस्ट, वाराणसी, वाल्यूम–नं०–3–2021, पृष्ठ–76–79।

(2) वशिष्ट, डॉ० राजेश, शैक्षिक तकनीकी, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवानी, 2012 ।

(3) निर्वाणी पूजा, शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में नवाचार आधारित शिक्षण विधियों के प्रति जागरूकता एवं उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रारूप, शिक्षा शास्त्र संकाय, ज्योति विद्यापीठ, महिला विश्वविद्यालय, जयपुर।

(4) अहिल्या, रानी, लुसेन्ट कम्प्यूटर, लुसेन्ट पबलिकेशन्स, पटना, 2018।